॥ श्री ॥

अष्टशती

ASHTASHATI

आ. अकलंक · ८वीं शती · अभिलेख ३१/९०

श्री गण्डविमुक्तदेव-1 → आ. अकलंक

संक्षिप्त परिचय

भट्ट अकलंकदेव कृत — समन्तभद्र की आप्तमीमांसा पर आठ सौ श्लोक-प्रमाण भाष्य; इसी पर विद्यानन्द ने अष्टसहस्री रची — 'कष्टसहस्री' कहलाने वाली गहन दार्शनिक धारा का मूल।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

अष्टशती — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ३१ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. अकलंक; रचना-काल ८वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक २९५) के अनुसार इनका समय ११५८–११८२ है तथा गुरु श्री गण्डविमुक्तदेव-१। इसी लेखनी से लघीयस्त्रय, तत्त्वार्थराजवार्तिक, न्यायविनिश्चय, प्रमाणसंग्रह भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में हरिवंशपुराण परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

लघीयस्त्रय · तत्त्वार्थराजवार्तिक · न्यायविनिश्चय · प्रमाणसंग्रह

समकालीन ग्रन्थ

हरिवंशपुराण

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ३१ — मूल छायाचित्र

← प्रमाणसंग्रह

हरिवंशपुराण →